डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 22-07-2020

विषय- वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य का वर्गीकरण

यद्यपि सहिताएं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद और कल्पसूत्र सहित छह वेदांग वैदिक साहित्य में इन सभी का परीगणन होता है, तथापि इस संपूर्ण साहित्य के रचना काल में और रचना उद्देश्य में भिन्नता का होना स्वाभाविक है। अतः संपूर्ण वैदिक साहित्य को विद्वानों ने अनेक वर्गों में विभाजित किया है। प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर ने रचनाओं के पुर्वा पर -क्रम की दृष्टि से वैदिक साहित्य के चार युग माने हैं।

1. छान्दस् युग- इनमें सर्वप्रथम ऋग्वेद के छन्दों अथवा मंत्रों की रचना हुई है ।
2. मंत्र युग- इसमें मंत्रों को चार संहिताओं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में संकलित किया गया है ।
3. ब्राम्हण युग- इस युग में चारों वेदों के ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् आदि रचे गए हैं, और
4. सूत्र युग - इस युग में सूत्र ग्रंथों कल सूत्रों और अ न्य वेदांगों की रचना हुई।

प्रोफेसर विंटरनिट्स सूत्रयुग के साहित्य को छोड़कर शेष को वैदिक साहित्य माना है। इनका मत है कि सूत्र ग्रंथ विशुद्ध वैदिक साहित्य की कोटि में नहीं आते हैं। अतः उन्होंने अपने वर्गीकरण में सूत्र ग्रंथ एवं वेदांगों को स्थान नहीं दिया है । इन ग्रंथों का विवेचन उन्होंने वैदिक साहित्य से संबंधित साहित्य के रूप में किया है । साहित्य के तीन वर्ग बनाए हैं ।

1. चारों संस्थाएं
2. ब्राह्मण ग्रंथ और आरण्यक ग्रंथ।
3. उपनिषद् ग्रंथ।

डॉक्टर कीथ ने अपने वर्गीकरण में, सूत्र -ग्रंथों को स्थान देते हुए भी, संपूर्ण वैदिक साहित्य को तीन ही वर्गों में रखा है-

1. प्रथम वर्ग में ऋग्वेद के प्राचीन मंत्र
2. द्वितीय वर्ग में ऋग्वेद के अर्वाचीन मंत्र ,साम्, यजूष् और अथर्व- इन तीनों संहिताओं के साथ ही ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्।और

3. तृतीय वर्ग में स्रोत सूत्र और गृह्यसूत्र।

उपर्युक्त पाश्चात्य विद्वानों के साथ ही अनेक भारतीय विद्वानों ने भी वैदिक साहित्य का वर्गीकरण अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार किया है। श्री तारिणीचरण चौधरी के विचार से वैदिक साहित्य के तीन काल हैं-

1. संहिता काल।
2. ब्राह्मण काल (आरण्यक और उपनिषद सहित) तथा
3. सूत्र काल

पंडित बलदेव उपाध्याय तथा गौरीशंकर उपाध्याय ने सर्वप्रथम वैदिक साहित्य के दो वर्ग बनाए हैं-

1. संहिताएं और 2. ब्राह्मण ।

पुनः उन्होंने ब्राह्मण वर्ग के तीन उपवर्ग बनाए हैं-

क. ब्राह्मण -ग्रंथ
ख. आरण्यक -ग्रंथ
ग. उपनिषद्-ग्रंथ

श्री सी०बी०वैद्य के मतानुसार श्रुति अथवा वैदिक काल का साहित्य स्वाभाविक रूप से दो भागों में विभाजित हो जाता है-

1. वेद और 2. वेदांग

वेद वाले भाग के पुनः दो उपभाग किए हैं-

क. संहिताएं और
ख. ब्राह्मण

उपर्युक्त वर्गीकरण को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस वर्गीकरण का उद्देश्य यही है कि एक तो वैदिक साहित्य के रचना क्रम का कुछ आभास हो और दूसरे अध्ययन की दृष्टि से भी पाठकों को सुविधा हो जाए। वास्तव में देखा जाता है कि परस्पर सम्बद्धता एवं महत्ता की दृष्टि से संपूर्ण वैदिक साहित्य एक इकाई के रूप में है। इसमें आरंभिक रचना ऋग्वेद से लेकर अंतिम रचना अर्थात वेदांग तक का सार ही साहित्य सम्मिलित रूप से परिगणित होता है । जैसा कि प्रोफेसर विंटर ने कहा है। इस संपूर्ण साहित्य के उत्तरोत्तर विकास में एक सूत्र- संगति है, कुछ आधारभूत एकता सी है।

संक्षेप में वैदिक साहित्य के वर्गीकरण संबंधी उपर्युक्त विवेचन में विभिन्न वर्गों के सीमा विस्तार के संबंध में विद्वानों में भले ही मत एक न हो किंतु इससे संपूर्ण वैदिक साहित्य के क्षेत्र और उसके सीमा विस्तार का निश्चय,

सरलता से ही हो जाता है । अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर संपूर्ण वैदिक साहित्य को हम अधोलिखित इन छह वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं-

1. संहिताएं
2. ब्राह्मण -ग्रंथ
3. आरण्यक- ग्रंथ
4. उपनिषद -ग्रंथ
5. कल्पसूत्र
6. शेष वेदांग

अतः इस विभाजन में कोई अस्पष्टता नहीं है, साथ ही कोई रचना वैदिक साहित्य में परिगणित होती है या नहीं, यह बात भी इस वर्गीकरण से सरलता से ही जानी जा सकती है।